

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 10, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1: ब्रिटिश भारत में सिख सुधार आंदोलन

निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. निरंकारी आंदोलन ने सिख धर्म की मूल शिक्षाओं पर लौटने पर जोर दिया, मूर्तिपूजा और रीति-रिवाजों को अस्वीकार किया।
2. सिंह सभा आंदोलन ने पंजाब में सिखों के बीच ईसाई मिशनरी शिक्षा को बढ़ावा दिया।

सही विकल्प चुनें:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 न ही 2

उत्तर: (a) केवल 1

व्याख्या:

- **कथन 1:** सही। बाबा दयाल द्वारा 19वीं सदी के मध्य में स्थापित, निरंकारी आंदोलन ने सिख धर्म को शुद्ध करने के लिए रीतिवाद और मूर्तिपूजा के खिलाफ संघर्ष किया और एकेश्वरवाद को महत्व दिया।
- **कथन 2:** गलत। सिंह सभा आंदोलन (1873 में स्थापित) का उद्देश्य सिख पहचान का पुनरुद्धार, सिख धार्मिक शिक्षाओं का प्रचार और ईसाई मिशनरी प्रभाव का मुकाबला करना था, न कि ईसाई शिक्षा को बढ़ावा देना।

प्रश्न 2: पारिस्थितिकी तंत्र के घटक

निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मिट्टी का pH और तापमान अजैविक (non-living) घटकों के उदाहरण हैं।
2. कवक और बैक्टीरिया जैसे अपघटक (decomposers) अजैविक घटक हैं।
3. जीवित जीवक (living organisms) पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह और पोषक तत्वों के चक्र में भूमिका निभाते हैं।

सही विकल्प चुनें:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b) केवल 1 और 3

व्याख्या:

- **कथन 1:** सही। अजैविक घटक वे गैर-जीवित पर्यावरणीय तत्व हैं, जैसे तापमान, मिट्टी, pH, जल और सूर्य का प्रकाश।
- **कथन 2:** गलत। अपघटक जीवित जीव हैं और ये पारिस्थितिकी तंत्र के जैविक (biotic) घटक हैं।
- **कथन 3:** सही। उत्पादक (producers), उपभोक्ता (consumers), और अपघटक (decomposers) ऊर्जा के संचरण और पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 3: भारत में वित्तीय नियामक

निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. SEBI शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड और क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों की निगरानी करता है।
2. IRDA पेंशन फंड और स्टॉक ब्रोकर्स को नियंत्रित करता है।
3. SEBI के पास आंतरिक व्यापार (insider trading) और अन्य अनुचित प्रथाओं के लिए entities को दंडित करने का अर्ध-न्यायिक अधिकार है।

सही विकल्प चुनें:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b) केवल 1 और 3

व्याख्या:

- **कथन 1:** सही। SEBI (भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड) शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, पोर्टफोलियो मैनेजर और क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों की निगरानी करता है।
- **कथन 2:** गलत। IRDAI केवल बीमा कंपनियों को नियंत्रित करता है, पेंशन फंड PFRDA के अंतर्गत आते हैं और स्टॉक ब्रोकर्स SEBI के अंतर्गत आते हैं।
- **कथन 3:** सही। SEBI के पास अर्ध-विधायी, अर्ध-कार्यकारी और अर्ध-न्यायिक शक्तियाँ हैं, जिसमें आंतरिक व्यापार और अन्य बाजार दुरुपयोगों के लिए दंड लगाने की क्षमता शामिल है।

प्रश्न 4: दक्षिण भारतीय लघु चित्रकला (Miniature Painting)

निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. लघु चित्रकला तमिलनाडु में नायक काल के दौरान विकसित हुई।
2. मैसूर स्कूल की विशेषता महीन रेखाएँ, सूक्ष्म रंग और मुख्यतः वैष्णव विषय हैं।
3. तंजावुर चित्रकला, हालांकि दक्षिण भारत में लोकप्रिय है, लघु चित्रकला परंपरा का हिस्सा नहीं मानी जाती।
4. आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी भित्तिचित्र विजयनगर काल की लघु चित्रकला शैली का अनुसरण करते हैं।

सही विकल्प चुनें:

- (a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 1, 2 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a) केवल 1, 2 और 3

व्याख्या:

- **कथन 1:** सही। नायक शासकों (विजयनगर साम्राज्य के उत्तराधिकारी) ने मंदिरों और दरबारों में स्थानीय चित्रकला परंपराओं को बढ़ावा दिया।
- **कथन 2:** सही। मैसूर चित्रकला विजयनगर शैली से विकसित हुई, जिसमें सूक्ष्म रंग, जटिल रेखाएं और भक्ति वैष्णव विषय प्रमुख हैं।
- **कथन 3:** सही। तंजावुर चित्रकला बड़ी आयामों और विस्तृत अलंकरण के कारण लघु चित्रकला नहीं मानी जाती।
- **कथन 4:** गलत। लेपाक्षी भित्तिचित्र दीवारों पर बनाए गए भित्तिचित्र हैं, लघु चित्र नहीं, हालांकि विजयनगर कला प्रभाव को दर्शाते हैं।

प्रश्न 5: आशय-कारण (Assertion-Reason)

आशय (A): ज़ेनोट्रांसप्लांटेशन (Xenotransplantation) मानव अंगों की कमी के समाधान का संभावित तरीका है।

कारण (R): मानव में अंगों के अस्वीकरण को कम करने के लिए आनुवंशिक रूप से संशोधित सूअर का उपयोग किया जा रहा है।

सही विकल्प चुनें:

- (a) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, लेकिन R गलत है
(d) A गलत है, लेकिन R सही है

उत्तर: (a) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है

व्याख्या:

- **आशय:** सही। ज़ेनोट्रांसप्लांटेशन में विभिन्न प्रजातियों (जैसे सूअर से मानव) के अंगों या ऊतकों का प्रत्यारोपण शामिल है और यह मानव दाता अंगों की कमी को पूरा करने का तरीका माना जाता है।
- **कारण:** सही। आनुवंशिक रूप से संशोधित सूअर से अंगों के अस्वीकरण की संभावना कम होती है और मानव शरीर के अनुकूलता में सुधार होता है।
- **संबंध:** कारण सीधे आशय को स्पष्ट करता है, इसलिए R, A का सही औचित्य है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. डाइविंग सपोर्ट वेसल (DSV) निपुण (Nipun) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पनडुब्बी बचाव के लिए इसकी सार्थकता केवल इसकी अपनी डाइविंग क्षमता से ही उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि एक गहरे जलमग्न बचाव वाहन (DSRV) के लिए एक सहायता मंच (support platform) के रूप में कार्य करने की इसकी क्षमता से भी उत्पन्न होती है।
2. इस पोत पर 'डायनेमिक पोजिशनिंग' का उपयोग विशेष रूप से पानी के नीचे के संचालन के लिए प्रासंगिक है क्योंकि एक सटीक स्थिति बनाए रखने से प्रतिकूल समुद्री स्थितियों में पानी के नीचे की प्रणालियों को लॉन्च करने, रिकवर करने और सहायता प्रदान करने की परिचालन कठिनाई कम हो सकती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
 - (b) केवल 2
 - (c) 1 और 2 दोनों
 - (d) न तो 1 और न ही 2
- उत्तर: (c) 1 और 2 दोनों**

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं।

- **कथन 1 सही है:** आईएनएस निपुण 'निस्तार श्रेणी' का दूसरा डाइविंग सपोर्ट वेसल (DSV) है, जिसे विशाखापट्टनम में हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित किया गया है। यह केवल पारंपरिक डाइविंग के लिए कोई साधारण पोत नहीं है। इसे एक एकीकृत बहु-मिशन प्लेटफॉर्म के रूप में डिजाइन किया गया है जो गहरे समुद्र में संतृप्ति डाइविंग (saturation diving), पानी के नीचे हस्तक्षेप (underwater intervention), बचाव (salvage) और पनडुब्बी बचाव अभियानों में सक्षम है। महत्वपूर्ण रूप से, यह एक गहरे जलमग्न बचाव वाहन (Deep Submergence Rescue Vehicle - DSRV) के लिए एक सहायता मंच के रूप में कार्य कर सकता है, जिसका उपयोग किसी विकलांग या दुर्घटनाग्रस्त पनडुब्बी में फंसे कर्मियों तक पहुंचने के लिए किया जा सकता है।

यह अंतर महत्वपूर्ण है: एक DSV और एक DSRV एक ही चीज़ नहीं हैं। DSV मदर-शिप/सहायता बुनियादी ढांचा प्रदान करता है, जबकि DSRV विशेष रूप से गहरे जलमग्न बचाव कार्य को अंजाम देता है।

- **कथन 2 भी सही है:** निपुण में डायनेमिक पोजिशनिंग और स्टेशन-कीपिंग क्षमताएं शामिल हैं, जो पोत को धाराओं, हवाओं और तरंगों के बावजूद अपनी स्थिति बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं। यह परिशुद्धता-गहन पानी के नीचे की गतिविधियों के दौरान विशेष रूप से मूल्यवान है, जिसमें डाइविंग संचालन, पानी के नीचे प्रणालियों की तैनाती/रिकवरी और पनडुब्बी-बचाव सहायता शामिल है।

पोत में डाइविंग कॉम्प्लेक्स, डाइविंग बेल, मिश्रित-गैस प्रणाली, हाइपरबेरिक सुविधाएं और रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल (ROV) भी शामिल हैं।

एक और महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि निपुण एक स्वदेशी एंड-टू-एंड अंडरवाटर इंटरवेंशन इकोसिस्टम बनाने के भारत के प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे विशेष पानी के नीचे अभियानों के लिए विदेशी सहायता पर निर्भरता कम होती है। इस पोत में लगभग 75% स्वदेशी सामग्री शामिल है।

यूपीएससी ट्रेप (UPSC Trap):

DSV, DSRV और DSC के बीच भ्रमित न हों। डाइविंग सपोर्ट वेसल (DSV) एक विशेष मदर/सपोर्ट प्लेटफॉर्म है; डीप सबमर्जेंस रेस्क्यू व्हीकल (DSRV) एक पानी के नीचे का बचाव वाहन है; जबकि डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट (DSC) नौसेना प्लेटफॉर्म की एक अलग और छोटी श्रेणी है।

प्रश्न 2. कार्बोसल्फान (Carbosulfan), जिसे हाल ही में भारत में प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव दिया गया था, निम्नलिखित में से किस श्रेणी से संबंधित है?

- (a) ऑर्गेनोफॉस्फेट कीटनाशक जो एसिटाइलकोलीनस्टेरेज़ को अपरिवर्तनीय (irreversibly) रूप से रोकता है
- (b) कार्बामेट कीटनाशक जिसकी विषाक्तता एसिटाइलकोलीनस्टेरेज़ के प्रतिवर्ती (reversible) निषेध से जुड़ी है और जिसके चयापचय (metabolism) से कार्बोफ्यूरोन उत्पन्न हो सकता है
- (c) ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशक जिसकी मुख्य विषाक्तता कैल्शियम चयापचय में व्यवधान के माध्यम से उत्पन्न होती है
- (d) पाइरेथ्रॉइड कीटनाशक जिसकी मुख्य क्रिया एसिटाइलकोलीनस्टेरेज़ का अपरिवर्तनीय निषेध है

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कार्बोसल्फान एक व्यापक स्पेक्ट्रम कार्बामेट कीटनाशक (broad-spectrum carbamate pesticide) है। इसमें कीटनाशक, ऐकरीसाइडल (कीट-मकड़ी नाशक) और नेमैटोसाइडल (सूत्रकृमि नाशक) अनुप्रयोग शामिल हैं। इसकी विषाक्त क्रिया में एसिटाइलकोलीनस्टेरेज़ (AChE) का निषेध शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप एसिटाइलकोलीन का संचय होता है और सामान्य तंत्रिका संचरण में व्यवधान पड़ता है।

इस प्रश्न में मुख्य अंतर कार्बामेट और ऑर्गेनोफॉस्फेट कीटनाशकों के बीच है।

कार्बामेट यौगिक आमतौर पर कार्बामिलेशन के माध्यम से AChE को रोकते हैं, और यह निषेध आमतौर पर प्रतिवर्ती (reversible) होता है, जबकि कई ऑर्गेनोफॉस्फेट एंजाइम के फॉस्फोराइलेशन के माध्यम से बहुत अधिक स्थायी/अपरिवर्तनीय (irreversible) निषेध उत्पन्न करते हैं।

कार्बोसल्फान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक प्रो-पेस्टीसाइड (pro-pesticide) है और चयापचय के बाद कार्बोफ्यूथुरान में बदल सकता है, जो अत्यधिक विषाक्त है। यह चयापचय मार्ग इसके निरंतर उपयोग से जुड़ी प्रमुख चिंताओं में से एक है।

सरकार के 2026 के मसौदा आदेश में इसके निर्माण, आयात, परिवहन, वितरण, बिक्री और उपयोग को कवर करने वाले पूर्ण प्रतिबंध का प्रस्ताव दिया गया था। पंजीकरण समिति ने मनुष्यों और गैर-लक्ष्य जीवों (पक्षियों, परागणकों और जलीय जीवों सहित) के लिए गंभीर खतरों की पहचान की थी।

इसलिए:

- (a) गलत है — कार्बोसल्फान एक ऑर्गेनोफॉस्फेट नहीं है और इसके निषेध को अपरिवर्तनीय ऑर्गेनोफॉस्फेट निषेध के समान वर्गीकृत नहीं किया जाता है।
- (b) सही है।
- (c) गलत है — यह एक ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशक नहीं है।
- (d) गलत है — यह न तो पाइरेथ्रॉइड है और न ही बताए गए तरीके से एक अपरिवर्तनीय AChE अवरोधक है।

वैचारिक सीख (Conceptual takeaway):

कीटनाशक से जुड़े प्रश्नों में, यूपीएससी रासायनिक वर्ग $\rightarrow$ जैव रासायनिक लक्ष्य $\rightarrow$ प्रतिवर्त्यता (reversibility) $\rightarrow$ मेटाबोलाइट $\rightarrow$ पारिस्थितिक परिणाम के बीच संबंधों का परीक्षण कर सकता है।

प्रश्न 3. मिशन समृद्ध गांव के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह गृह-स्तरीय (household-level) संतृप्ति दृष्टिकोण को अपनाता है, जिसके तहत लाभार्थियों की पहचान का उद्देश्य प्रासंगिक कल्याण और आजीविका हस्तक्षेपों के अभिसरण (convergence) से पहले होना है।
2. इसका एकीकृत कृषि घटक विविधीकरण को अपने आप में एक उद्देश्य मानता है, जिससे फसल खेती के साथ-साथ बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन और मधुमक्खी पालन जैसी गतिविधियों को संयोजित करने की अनुमति मिलती है।
3. यह मिशन मुख्य रूप से एक केंद्रीय रूप से वित्त पोषित कृषि सब्सिडी कार्यक्रम है जिसके तहत व्यक्तिगत किसानों को एकीकृत कृषि प्रणालियों को अपनाने के लिए प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** मिशन समृद्ध गांव की कल्पना एकल-क्षेत्रीय कृषि योजना के बजाय एक एकीकृत ग्रामीण परिवर्तन और आजीविका-संतृप्ति ढांचे के रूप में की गई है। यह गृह-स्तरीय पात्रता का मानचित्रण करने और परिवार, ग्राम पंचायत और ब्लॉक स्तरों पर योजनाएं तैयार करने का प्रयास करता है, जिससे चिन्हित ग्रामीण परिवारों के आसपास कई सरकारी कार्यक्रमों का अभिसरण (convergence) हो सके।

यह एक योजना-केंद्रित दृष्टिकोण से एक परिवार-केंद्रित संतृप्ति दृष्टिकोण (household-centric saturation approach) की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।

- **कथन 2 सही है:** एकीकृत कृषि प्रणालियाँ इसका एक महत्वपूर्ण घटक हैं। इसका उद्देश्य फसल खेती के साथ-साथ निम्नलिखित जैसी गतिविधियों को जोड़कर ग्रामीण आजीविका में विविधता लाना है:
 - बागवानी (horticulture)
 - पशुपालन (livestock)
 - मत्स्य पालन (fisheries)
 - कुक्कुट पालन (poultry)

- मधुमक्खी पालन (beekeeping)

ऐसा विविधीकरण कृषि आय के एकल स्रोत पर निर्भरता को कम कर सकता है और उत्पादन व मूल्य के झटकों के प्रति लचीलापन (resilience) बढ़ा सकता है।

- **कथन 3 गलत है:** यह मुख्य जाल/भ्रम है। मिशन समृद्ध गांव केवल एक प्रत्यक्ष-लाभ कृषि सब्सिडी कार्यक्रम नहीं है। इसके ढांचे में कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल, बुनियादी ढांचे, सामाजिक सुरक्षा और आजीविका हस्तक्षेपों का अभिसरण शामिल है। यह गोदामों, कोल्ड चेन और गांव स्तर की प्रसंस्करण सुविधाओं जैसे ग्रामीण बुनियादी ढांचे को भी बढ़ावा देता है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के बुधनी ब्लॉक और देवास जिले के खातेगांव ब्लॉक में इसका प्रारंभिक पायलट प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है।

यूपीएससी ट्रेप (UPSC Trap):

जब भी कोई प्रश्न किसी बहु-क्षेत्रीय अभिसरण मिशन को "कृषि सब्सिडी योजना" के रूप में वर्णित करता है, तो जांचें कि क्या हस्तक्षेप वास्तव में केवल खेत को लक्षित करता है या पूरे ग्रामीण परिवार/गांव के आजीविका पारिस्थितिकी तंत्र को।

प्रश्न 4. जलस्तंभ/वाटरस्पाउट्स (Waterspouts) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक शांत-मौसम जलस्तंभ (fair-weather waterspout) आमतौर पर गैर-मेसोसाइक्लोनिक (non-mesocyclonic) होता है और आम तौर पर पानी की सतह से ऊपर की ओर एक विकसित होते हुए कपासी मेघ (cumulus cloud) की ओर बढ़ता है।
2. एक टॉरनेडो जलस्तंभ (tornadic waterspout) एक टॉरनेडो से मौलिक रूप से केवल इसलिए भिन्न होता है क्योंकि यह पानी के ऊपर बनता है; गंभीर संवहनी तूफानों के साथ इसका गतिशील संबंध भूमि पर आने वाले टॉरनेडो के समान हो सकता है।
3. जलस्तंभ का दिखाई देने वाला फ़नल मुख्य रूप से निचले जल निकाय से यांत्रिक रूप से उठाए गए बड़े पैमाने पर समुद्री जल या ताजे जल से बना होता है।
4. भूमि पर पहुंचने पर जलस्तंभ का तुरंत गायब/समाप्त होना अनिवार्य है क्योंकि भंवर (vortex) को बनाए रखने के लिए निचली पानी की सतह अपरिहार्य है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 और 4 गलत हैं।

- **कथन 1 सही है:** शांत-मौसम जलस्तंभ आमतौर पर गैर-मेसोसाइक्लोनिक होते हैं। वे विकसित हो रहे कपासी मेघों के नीचे अपेक्षाकृत शांत परिस्थितियों में विकसित होते हैं। उनके विकास को आमतौर पर पानी की सतह के पास से शुरू होने और बादलों के आधार की ओर ऊपर की ओर बढ़ने के रूप में वर्णित किया जाता है।

यह उन्हें क्लासिक टॉरनेडो तंत्र से मौलिक रूप से अलग बनाता है।

- **कथन 2 सही है:** टॉरनेडो जलस्तंभ अनिवार्य रूप से पानी के ऊपर होने वाला एक टॉरनेडो है, या एक ऐसा टॉरनेडो है जो भूमि से पानी की ओर बढ़ता है। यह गंभीर संवहनी गरज के साथ तूफानों (convective thunderstorms) और मेसोसाइक्लोनिक परिसंचरण से जुड़ा हुआ है। इसलिए, गंभीर संवहन के साथ इसका गतिकीय संबंध (dynamical relationship) एक भूमि टॉरनेडो के काफी समान हो सकता है।

यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है: शांत-मौसम जलस्तंभ $\neq$ टॉरनेडो जलस्तंभ।

- **कथन 3 गलत है:** दिखाई देने वाला फ़नल मुख्य रूप से नदी या समुद्र से ऊपर की ओर चूसा गया जल स्तंभ नहीं होता है। यह मुख्य रूप से संघनित पानी की बूंदों से बना एक दृश्यमान संघनन फ़नल (condensation funnel) होता है, जो दबाव गिरने और नम हवा के ऊपर उठने पर बनता है। सतह पर पानी की बौछारें इसके साथ हो सकती हैं, लेकिन पूरे दृश्यमान स्तंभ को भौतिक रूप से उठाए गए पानी के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।
- **कथन 4 गलत है:** "अनिवार्य रूप से" शब्द इस कथन को समस्याग्रस्त बनाता है। सतह के घर्षण, नमी की आपूर्ति और थर्मोडायनामिक स्थितियों में बदलाव के कारण भूमि पर पहुंचने के बाद जलस्तंभ कमजोर हो सकते हैं, लेकिन निचली पानी की सतह कोई ऐसी सरल यांत्रिक आवश्यकता नहीं है जो तत्काल विनाश का कारण बने।

हाल ही में ब्रह्मपुत्र में देखा गया जलस्तंभ इस बात का भी एक उपयोगी अनुस्मारक है कि जलस्तंभ का विशेष रूप से समुद्र से जुड़ा होना आवश्यक नहीं है; ऐसी घटनाएँ झीलों और बड़ी नदियों के ऊपर भी हो सकती हैं।

यूपीएससी ट्रेप (UPSC Trap):

शांत-मौसम और टॉरनेडो जलस्तंभों के बीच का अंतर केवल यह याद रखने से अधिक महत्वपूर्ण है कि "जलस्तंभ पानी के ऊपर होते हैं।"

प्रश्न 5. सेबी (SEBI) के आईटी लचीलापन सूचकांक (IT Resilience Index - ITRI) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह केवल पारंपरिक आवधिक अनुपालन आकलनों पर निर्भर रहने के बजाय महत्वपूर्ण बाजार अवसंरचना के तकनीकी और साइबर लचीलेपन के पहलुओं को एक मात्रात्मक नियामक उपाय (quantitative regulatory measure) में बदलने का प्रयास करता है।
2. यह स्टॉक एक्सचेंजों, क्लियरिंग कॉरपोरेशन और डिपॉजिटरी जैसे मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस (MIIs) पर लागू होता है क्योंकि उनके तकनीकी बुनियादी ढांचे में विफलता का पूंजी बाजार पर प्रणालीगत प्रभाव पड़ सकता है।
3. उच्च ITRI स्कोर का अर्थ है कि संबंधित संस्थान से तकनीकी विफलताओं से मुक्त रहने की उम्मीद की जाती है, क्योंकि ढांचे के तहत लचीलेपन को मुख्य रूप से व्यवधानों की अनुपस्थिति से मापा जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** सेबी का आईटी लचीलापन सूचकांक तकनीकी लचीलेपन की मात्रा ठहराव (quantification) की दिशा में एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। केवल स्थिर अनुपालन आवश्यकताओं या आवधिक ऑडिट के माध्यम से आईटी प्रणालियों का आकलन करने के बजाय, यह सूचकांक तकनीकी झटकों को झेलने, अवशोषित करने और उनसे उबरने की बाजार अवसंरचना की क्षमता का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

इस सूचकांक में नौ-पैरामीटर वास्तुकला है, जिसमें मापदंडों को उनके प्रणालीगत महत्व के अनुसार भारित किया गया है।

उपलब्धता और साइबर सुरक्षा प्रमुख घटकों में से हैं, जबकि व्यवसाय निरंतरता, विश्वसनीयता और मापनीयता (scalability) भी इस ढांचे में शामिल हैं।

- **कथन 2 सही है:** ITRI मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस (MIIs) पर लागू होता है—जैसे स्टॉक एक्सचेंज, क्लियरिंग कॉरपोरेशन और डिपॉजिटरी। उनकी तकनीकी विफलता के ऐसे परिणाम हो सकते हैं जो एकल संस्थान से बहुत आगे तक जाते हैं क्योंकि ट्रेडिंग, क्लियरिंग, सेटलमेंट और कस्टडी सिस्टम आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं।

यह आईटी लचीलेपन को केवल एक आंतरिक आईटी-प्रबंधन मुद्दे के बजाय वित्तीय स्थिरता का विषय बनाता है।

- **कथन 3 गलत है:** यह मुख्य वैचारिक जाल है।

लचीलेपन (Resilience) का अर्थ शून्य विफलता (zero failure) नहीं है।

सूचकांक के पीछे का दर्शन इसके अधिक निकट है:

अवशोषित करना $\rightarrow$ सामना करना $\rightarrow$ उबरना $\rightarrow$ पुनर्स्थापित करना

ना कि:

कभी विफल न होना।

इसलिए यह ढांचा परिचालन झटकों, साइबर हमलों, सॉफ्टवेयर विफलताओं और अचानक लेनदेन-मात्रा में उछाल से निपटने और तेजी से उबरने की प्रणालियों की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करता है।

इसलिए एक संस्थान एक घटना का अनुभव कर सकता है और फिर भी मजबूत लचीलापन प्रदर्शित कर सकता है यदि उसका पता लगाने, रोकथाम, फेलओवर और रिकवरी तंत्र प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं।

यह ढांचा एक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (Early Warning System) की भी परिकल्पना करता है, जिसका उद्देश्य गिरावट, विलंबता स्पाइक्स (latency spikes) या हार्डवेयर तनाव का पता लगाना है, इससे पहले कि ये प्रमुख आउटटेज में विकसित हों।

यूपीएससी ट्रैप (UPSC Trap):

यह प्रश्न रोबस्टनेस (robustness) और रेजिलिएंस (resilience) के बीच वैचारिक अंतर का परीक्षण करता है।

रोबस्टनेस विफलता के प्रतिरोध पर जोर देती है; रेजिलिएंस इसके अतिरिक्त व्यवधान के बाद की रिकवरी/वापसी पर जोर देती है।

प्रश्न 6. हाल ही में चर्चा में रहे लाओखोवा वन्यजीव अभयारण्य (Laokhowa Wildlife Sanctuary) के संदर्भ में, निम्नलिखित भौगोलिक कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह असम के ब्रह्मपुत्र बाढ़ के मैदान (floodplain) में स्थित है और लाओखोवा-बुराचापोरी पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा है।

2. यह ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर स्थित है और मध्य असम के प्रमुख संरक्षित क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक लिंक बनाता है।
3. इसका पारिस्थितिक चरित्र आंशिक रूप से ब्रह्मपुत्र प्रणाली से जुड़ी मौसमी जलप्लावन (seasonal inundation), आर्द्रभूमि और जलोढ़ प्रक्रियाओं द्वारा आकार लेता है।

निम्नलिखित में से लाओखोवा वन्यजीव अभयारण्य का सही स्थान कौन सा है?

- (a) असम
- (b) अरुणाचल प्रदेश
- (c) मेघालय
- (d) पश्चिम बंगाल

उत्तर: (a) असम

व्याख्या:

लाओखोवा वन्यजीव अभयारण्य मध्य असम में, नगांव जिले में, ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह निकटवर्ती लाओखोवा-बुराचापोरी पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा है और ब्रह्मपुत्र बाढ़ के मैदान के परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

इसकी पारिस्थितिक महत्ता नदी की गतिशील बाढ़ के मैदान की प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ी हुई है, जिसमें शामिल हैं:

- मौसमी जलप्लावन (seasonal inundation),
- जलोढ़ निक्षेपण (alluvial deposition),
- नदी द्वीप और बालू के टीले (riverine islands and sandbars),
- आर्द्रभूमि और गोखुर झीलें (wetlands and oxbow lakes),
- घास के मैदान और तटीय आवास (grassland and riparian habitats)।

यह अभयारण्य मध्य असम में महत्वपूर्ण वन्यजीव परिदृश्यों को जोड़ने वाले एक पारिस्थितिक गलियारे के रूप में भी कार्य करता है, विशेष रूप से काजीरंगा और ओरांग परिदृश्यों के बीच।

काजीरंगा जलपक्षी गणना 2026 के दौरान प्रवासी स्म्यू (Smew - *Mergellus albellus*) और गंभीर रूप से संकटग्रस्त बंगाल फ्लोरिकन (Bengal Florican) के देखे जाने की सूचना के बाद इसने हाल ही में ध्यान आकर्षित किया है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS Paper 1

प्रश्न 1.

“नेपोलियन बोनापार्ट ने फ्रांस में व्यवस्था स्थापित की, किंतु स्वतंत्रता की कीमत पर।” – फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शों पर नेपोलियन के शासन के प्रभाव का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

फ्रांसीसी क्रांति (1789) स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों पर आधारित थी। किंतु 1799 तक फ्रांस राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा था और इसी समय नेपोलियन सत्ता में आया। यद्यपि उसने स्थिरता प्रदान की, उसका शासन क्रांतिकारी आदर्शों के संदर्भ में मिश्रित परिदृश्य प्रस्तुत करता है।

सकारात्मक योगदान:

- **कानूनी सुधार:**
 - 1804 का नेपोलियनिक संहिता (Napoleonic Code)
 - कानून के समक्ष समानता की गारंटी
 - सामंती विशेषाधिकारों का उन्मूलन
 - योग्यता-आधारित रोजगार को प्रोत्साहन
- **प्रशासनिक दक्षता:**
 - शासन का केन्द्रीकरण
 - नौकरशाही का सरलीकरण
 - कर प्रणाली का तार्किककरण
- **धार्मिक मेल-मिलाप:**
 - कैथोलिक चर्च के साथ कॉन्कोर्डेंट समझौता

- धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना
- राज्य-चर्च संबंधों का स्थिरीकरण

स्वतंत्रता पर प्रतिबंध:

- **सर्वसत्तावादी शासन:**
 - 1804 में स्वयं को सम्राट घोषित कर पुनः राजसत्ता स्थापित की।
- **विरोध का दमन:**
 - प्रेस पर सेंसरशिप
 - गुप्त पुलिस तंत्र
 - राजनीतिक विपक्ष का दमन
- **विदेश नीति:**
 - सैन्य अभियानों का लक्ष्य भू-क्षेत्रीय वर्चस्व था, न कि क्रांतिकारी आदर्शों का प्रसार।

समालोचनात्मक मूल्यांकन:

- नेपोलियन ने समानतावादी व प्रशासनिक पहलुओं को सुरक्षित रखा।
- किंतु राजनीतिक स्वतंत्रताओं का बलिदान कर केंद्रीकृत सत्ता स्थापित की।

निष्कर्ष:

- नेपोलियन का शासन क्रांति की प्रमुख उपलब्धियों को संस्थागत रूप में स्थिर करता है।
- किंतु उसकी लोकतांत्रिक आत्मा को सीमित कर देता है।
- उसकी विरासत एक ओर प्रगतिशील सुधारों की, तो दूसरी ओर स्वतंत्रता पर अंकुश की भी है।

GS Paper 2

प्रश्न 2.

भारतीय संविधान की प्रस्तावना मात्र एक सजावटी भूमिका नहीं है, बल्कि संवैधानिक प्रावधानों की व्याख्या में एक मार्गदर्शक प्रकाश है। न्यायिक निर्णयों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

संविधान की प्रस्तावना उसमें निहित **न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व** के मूल्यों का प्रतिबिंब है। यद्यपि यह विधिक रूप से बाध्यकारी नहीं है, परंतु न्यायालय इसे व्याख्या हेतु मार्गदर्शक मानते हैं।

न्यायिक मान्यता:

- **बेहरूबरी संघ मामला (1960):** प्रारम्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि प्रस्तावना संविधान का हिस्सा नहीं है।
- **केशवानंद भारती मामला (1973):** न्यायालय ने माना कि प्रस्तावना संविधान का अभिन्न हिस्सा है और यह मूल संरचना का प्रतीक है, जिसे संशोधित नहीं किया जा सकता।
- **एल.आई.सी. मामला (1995):** न्यायालय ने पुनः पुष्टि की कि प्रस्तावना संविधान की वैचारिक दिशा को दर्शाती है।

व्याख्या में उपयोग:

- **अस्पष्ट प्रावधानों की व्याख्या** में प्रस्तावना की मूल्यों से सहायता ली जाती है।
- **इंदिरा साहनी मामला (1992):** सामाजिक न्याय की अवधारणा ने आरक्षण नीति को मार्गदर्शन दिया।
- **एस.आर. बोम्मई मामला (1994):** प्रस्तावना में निहित धर्मनिरपेक्षता के आधार पर अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग को रोका गया।

निष्कर्ष:

- प्रस्तावना एक **नैतिक दिशा-सूचक (moral compass)** और **व्याख्यात्मक साधन** दोनों है।
- यह अधिकार प्रदान नहीं करती, किंतु संविधानिक सिद्धांतों की रक्षा में न्यायालयों को मार्गदर्शन देती है।

GS Paper 3

प्रश्न 3.

नाभिकीय ऊर्जा स्वच्छ ऊर्जा का विकल्प तो है, किंतु गंभीर चिंताओं को भी जन्म देती है। भारत में नाभिकीय ऊर्जा के विस्तार की संभावनाओं और चुनौतियों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं और निम्न-कार्बन विकल्प की आवश्यकता नाभिकीय ऊर्जा को रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है।

संभावनाएँ:

- **स्वच्छ ऊर्जा:**
 - न्यून उत्सर्जन
 - भारत के **नेट जीरो 2070** लक्ष्य के अनुरूप

- **ऊर्जा सुरक्षा:**
 - प्रचुर थोरियम भंडार
 - तीन-चरणीय नाभिकीय कार्यक्रम द्वारा आत्मनिर्भरता का लक्ष्य
- **निरंतर ऊर्जा आपूर्ति:**
 - पवन और सौर जैसे नवीकरणीय स्रोतों से भिन्न, नाभिकीय ऊर्जा स्थायी आपूर्ति प्रदान करती है।

चुनौतियाँ:

- **सुरक्षा जोखिम:**
 - फुकुशिमा जैसी घटनाएँ
 - कुडनकुलम जैसे संयंत्रों पर विरोध प्रदर्शन
- **अपशिष्ट प्रबंधन:**
 - रेडियोधर्मी अपशिष्ट का दीर्घकालीन पर्यावरणीय खतरा
- **उच्च लागत और विलंब:**
 - परियोजनाओं में समय और बजट से अधिक खर्च
- **ईंधन निर्भरता:**
 - घरेलू यूरेनियम की कमी, आयात पर निर्भरता

आगे की राह:

- थोरियम आधारित रिएक्टर और छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों का विकास।
- नियामक ढाँचों और जनसहभागिता को मजबूत करना।
- BARC और अन्य संस्थानों द्वारा स्वदेशी तकनीकों को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष:

- नाभिकीय ऊर्जा अकेले समाधान नहीं है, परंतु ऊर्जा रणनीति का प्रमुख स्तंभ बन सकती है।
- यदि सुरक्षा, पर्यावरण और सामाजिक चिंताओं का समाधान किया जाए तो इसका प्रभावी उपयोग संभव है।

GS Paper 4

प्रश्न 4.

“सत्ता भ्रष्ट करती है, और पूर्ण सत्ता पूर्णतः भ्रष्ट करती है।” – सार्वजनिक प्रशासन में सत्ता के दुरुपयोग को रोकने हेतु आवश्यक नैतिक उपायों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर:

लॉर्ड एक्टन का कथन यह दर्शाता है कि अनियंत्रित सत्ता सदैव दुरुपयोग की ओर ले जाती है। शासन-प्रशासन में, जहाँ निर्णय करोड़ों लोगों को प्रभावित करते हैं, वहाँ नैतिक उपाय अनिवार्य हैं।

सत्ता के दुरुपयोग के स्रोत:

- निगरानी के बिना विवेकाधिकार
- राजनीतिक पक्षपात और अपारदर्शिता
- हितों का टकराव और मिलीभगत

नैतिक उपाय:

1. **आचार संहिता** – ईमानदारी और जनता-केन्द्रित निर्णय को सुनिश्चित करना।
2. **उत्तरदायित्व तंत्र** – सतर्कता आयोग, सीएजी ऑडिट, सूचना का अधिकार, लोकपाल।
3. **विसलब्लोअर संरक्षण** – भ्रष्टाचार की सूचना देने वालों की सुरक्षा।
4. **नैतिकता प्रशिक्षण** – सिविल सेवकों को मूल्य-आधारित शिक्षा।
5. **जन-केन्द्रित तंत्र** – नागरिक चार्टर और ई-शासन द्वारा विवेकाधिकार को कम करना।
6. **मजबूत संस्थाएँ** – न्यायपालिका, मीडिया और नागरिक समाज निगरानी के साधन।

उदाहरण:

- GeM प्लेटफॉर्म द्वारा सरकारी खरीद में मानव हस्तक्षेप कम कर भ्रष्टाचार पर अंकुश।

निष्कर्ष:

- नैतिक उपाय यह सुनिश्चित करते हैं कि सत्ता निजी हित के बजाय जनहित की सेवा करे।
- पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नैतिकता ही सुशासन का आधार हैं।

Current Affairs

प्रश्न 5.

“विकसित भारत 2047” के निर्माण में श्रम सुधारों को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत की श्रम सुधार रणनीति की संभावनाओं और चुनौतियों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

श्रम सुधार उत्पादकता, रोजगार सृजन और व्यापार सुगमता से जुड़े हैं – जो विकसित भारत के लिए आवश्यक स्तंभ हैं।

हालिया सुधार:

- 29 केंद्रीय श्रम कानूनों का चार **श्रम संहिताओं** में समेकन:
 - वेतन संहिता
 - औद्योगिक संबंध संहिता
 - सामाजिक सुरक्षा संहिता
 - व्यावसायिक सुरक्षा संहिता
- औपचारिकरण को प्रोत्साहन, श्रमिकों का डिजिटलीकृत डेटा (ई-श्रम पोर्टल)
- सामाजिक सुरक्षा लाभों की पोर्टेबिलिटी

संभावित लाभ:

- जटिलताओं का सरलीकरण → अनुपालन बोझ में कमी
- निवेश आकर्षित करने की संभावना
- श्रम गतिशीलता और गिग-श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा
- MSMEs को छँटनी सीमा में राहत

चुनौतियाँ:

- रोजगार सुरक्षा और सामूहिक सौदेबाज़ी के कमजोर होने की आशंका
- कई राज्यों द्वारा संहिताओं की अधिसूचना में विलंब
- असंगठित क्षेत्र (90% से अधिक कार्यबल) अभी भी नियामकीय दायरे से बाहर रह सकता है

निष्कर्ष:

- श्रम सुधार आर्थिक वृद्धि को गति दे सकते हैं, किंतु इन्हें **समावेशी और अधिकार-आधारित** होना चाहिए।
- “विकसित भारत 2047” की रणनीति तभी सफल होगी जब यह **समानता, सामाजिक न्याय और पारदर्शी क्रियान्वयन** पर आधारित हो।

